



Vikash sah

12 May 1977

10:46 AM

Varanasi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121509401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 12/05/1977
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 10:46:00 घंटे
इष्ट _____: 13:47:08 घटी
स्थान _____: Varanasi
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 25:20:00 उत्तर
रेखांश _____: 83:00:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:02:00 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 10:48:00 घंटे
वेलान्तर _____: 00:03:41 घंटे
साम्पातिक काल _____: 02:07:28 घंटे
सूर्योदय _____: 05:15:08 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:33:56 घंटे
दिनमान _____: 13:18:48 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: ग्रीष्म
सूर्य के अंश _____: 27:49:22 मेष
लग्न के अंश _____: 14:50:25 कर्क

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कर्क - चन्द्र
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: पू०भाद्रपद - 1
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: वैधृति
करण _____: विष्टि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: से-सेनजित
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृष

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1899	वैशाख	22
पंजाबी	संवत : 2034	वैशाख	30
बंगाली	सन् : 1384	वैशाख	29
तमिल	संवत : 2034	चिथिराई	29
केरल	कोल्लम : 1152	मेदम	29
नेपाली	संवत : 2034	वैशाख	30
चैत्रादि	संवत : 2034	ज्येष्ठ	कृष्ण 10
कार्तिकादि	संवत : 2034	वैशाख	कृष्ण 10

पंचांग

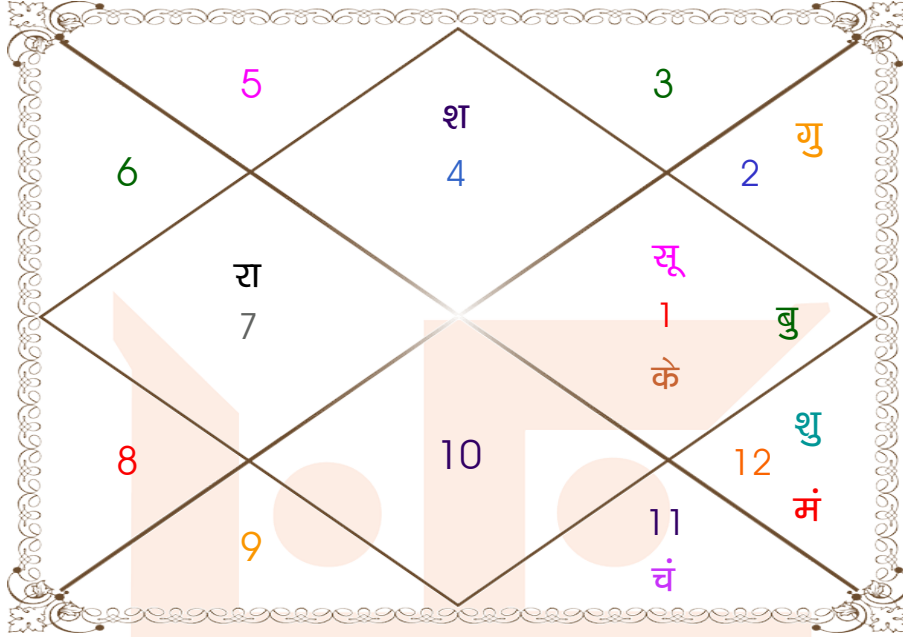
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
तिथि समाप्ति काल _____ : 22:08:32
जन्म तिथि _____ : 10
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : शतभिषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 06:19:02 घंटे
जन्म योग _____ : पू०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____ : वैधृति
योग समाप्ति काल _____ : 28:18:09 घंटे
जन्म योग _____ : वैधृति
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 09:41:55 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 11:07:25
भभोग _____ : 63:59:06
भोग्य दशा काल _____ : गुरु 13 वर्ष 2 मा 8 दि

घात चक्र

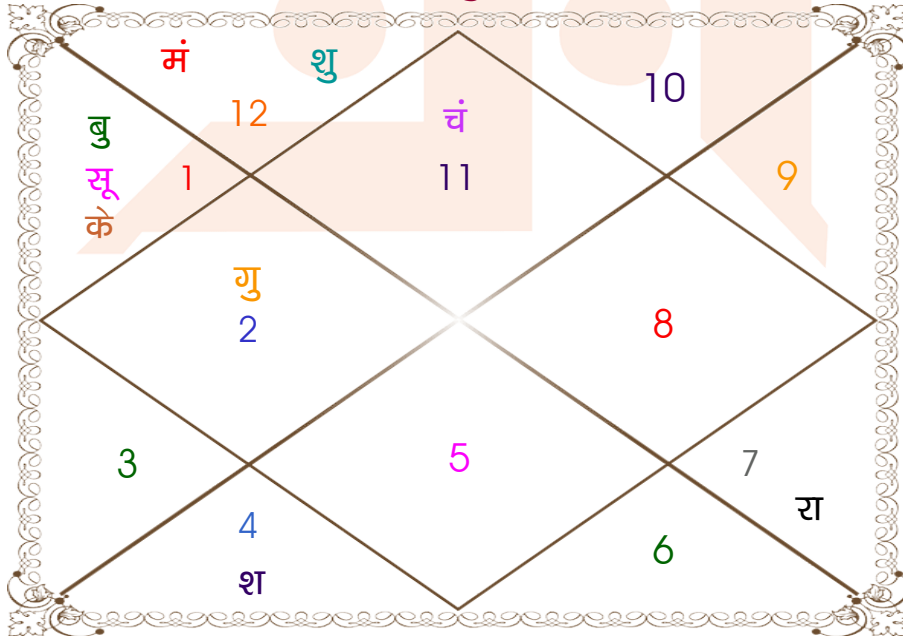
मास _____ : चैत्र
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : गुरुवार
नक्षत्र _____ : आर्द्रा
योग _____ : गण्ड
करण _____ : किंस्तुघ्न
प्रहर _____ : 3
वर्ग _____ : श्वान
लग्न _____ : मिथुन
सूर्य _____ : वृष
चन्द्र _____ : धनु
मंगल _____ : मिथुन
बुध _____ : वृष
गुरु _____ : कर्क
शुक्र _____ : सिंह
शनि _____ : मेष
राहु _____ : कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

शु मं	के सू बु	गु	
चं			श ल
		रा	

लग्न कुण्डली

गु	के सू बु	शु मं
श ल		चं
	रा	

विंशोत्तरी

गुरु 13वर्ष 2मा 8दि
गुरु

12/05/1977

21/07/2094

गुरु	21/07/1990
शनि	21/07/2009
बुध	21/07/2026
केतु	21/07/2033
शुक्र	21/07/2053
सूर्य	21/07/2059
चन्द्र	21/07/2069
मंगल	20/07/2076
राहु	21/07/2094

योगिनी

भामरी 3वर्ष 3मा 17दि
उल्का

29/08/2021

29/08/2027

उल्का	29/08/2022
सिद्धा	29/10/2023
संकटा	27/02/2025
मंगला	29/04/2025
पिंगला	29/08/2025
धान्या	27/02/2026
भामरी	29/10/2026
भद्रिका	29/08/2027

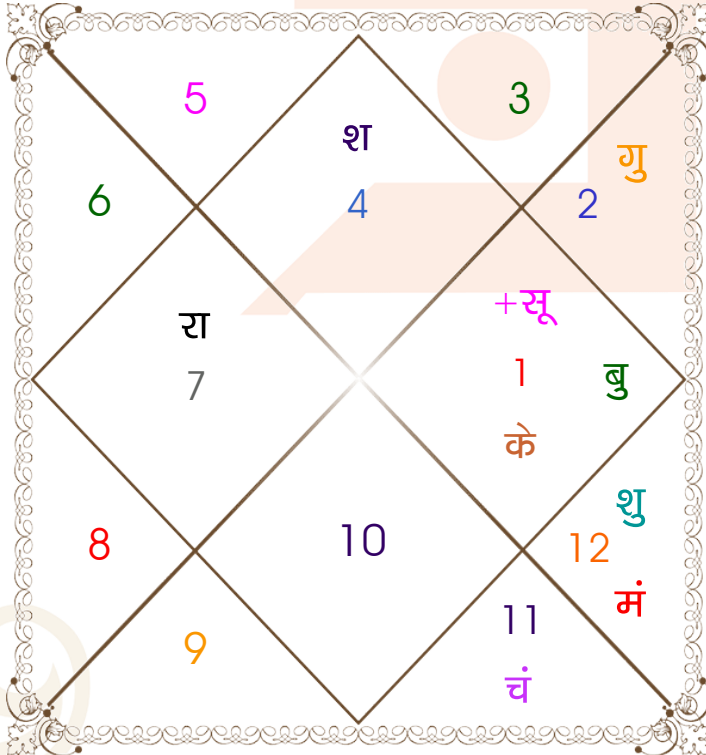
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कर्क	14:50:25	312:45:48	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	राहु	---
सूर्य			मेष	27:49:22	00:57:56	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	उच्च राशि
चंद्र			कुंभ	22:20:27	12:35:56	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	सम राशि
मंगल			मीन	17:38:56	00:45:52	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	मित्र राशि
बुध	व	अ	मेष	11:16:21	00:07:35	अश्विनी	4	1	मंगल	केतु	शनि	सम राशि
गुरु			वृष	14:44:30	00:13:42	रोहिणी	2	4	शुक्र	चंद्र	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			मीन	18:33:03	00:29:02	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	उच्च राशि
शनि			कर्क	17:15:35	00:03:13	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	शत्रु राशि
राहु			तुला	00:35:06	00:01:45	चित्रा	3	14	शुक्र	मंगल	बुध	मित्र राशि
केतु			मेष	00:35:06	00:01:45	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	केतु	मित्र राशि
हर्ष	व		तुला	15:43:15	00:02:28	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
नेप	व		वृश्चि	21:51:52	00:01:26	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	सूर्य	---
प्लूटो	व		कन्या	18:16:53	00:01:12	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	---
दशम भाव			मेष	10:34:41	--	अश्विनी	--	1	मंगल	केतु	शनि	--

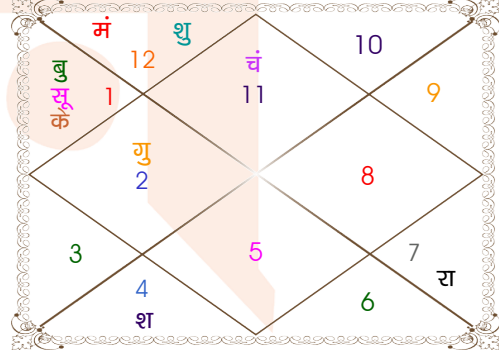
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:32:33

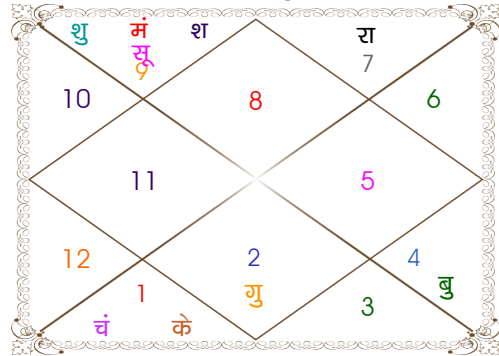
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 13 वर्ष 2 मास 8 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
12/05/1977	21/07/1990	21/07/2009	21/07/2026	21/07/2033
21/07/1990	21/07/2009	21/07/2026	21/07/2033	21/07/2053
12/05/1977	शनि 24/07/1993	बुध 17/12/2011	केतु 17/12/2026	शुक्र 19/11/2036
शनि 21/03/1979	बुध 02/04/1996	केतु 14/12/2012	शुक्र 16/02/2028	सूर्य 19/11/2037
बुध 26/06/1981	केतु 12/05/1997	शुक्र 14/10/2015	सूर्य 23/06/2028	चंद्र 21/07/2039
केतु 02/06/1982	शुक्र 11/07/2000	सूर्य 20/08/2016	चंद्र 22/01/2029	मंगल 19/09/2040
शुक्र 31/01/1985	सूर्य 23/06/2001	चंद्र 19/01/2018	मंगल 20/06/2029	राहु 20/09/2043
सूर्य 19/11/1985	चंद्र 23/01/2003	मंगल 17/01/2019	राहु 09/07/2030	गुरु 21/05/2046
चंद्र 21/03/1987	मंगल 02/03/2004	राहु 05/08/2021	गुरु 15/06/2031	शनि 21/07/2049
मंगल 25/02/1988	राहु 07/01/2007	गुरु 11/11/2023	शनि 24/07/2032	बुध 21/05/2052
राहु 21/07/1990	गुरु 21/07/2009	शनि 21/07/2026	बुध 21/07/2033	केतु 21/07/2053

सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
21/07/2053	21/07/2059	21/07/2069	20/07/2076	21/07/2094
21/07/2059	21/07/2069	20/07/2076	21/07/2094	00/00/0000
सूर्य 07/11/2053	चंद्र 21/05/2060	मंगल 17/12/2069	राहु 03/04/2079	गुरु 07/09/2096
चंद्र 09/05/2054	मंगल 20/12/2060	राहु 04/01/2071	गुरु 26/08/2081	शनि 12/05/2097
मंगल 14/09/2054	राहु 21/06/2062	गुरु 11/12/2071	शनि 02/07/2084	00/00/0000
राहु 08/08/2055	गुरु 21/10/2063	शनि 19/01/2073	बुध 20/01/2087	00/00/0000
गुरु 27/05/2056	शनि 21/05/2065	बुध 16/01/2074	केतु 07/02/2088	00/00/0000
शनि 09/05/2057	बुध 20/10/2066	केतु 14/06/2074	शुक्र 07/02/2091	00/00/0000
बुध 15/03/2058	केतु 21/05/2067	शुक्र 15/08/2075	सूर्य 02/01/2092	00/00/0000
केतु 21/07/2058	शुक्र 19/01/2069	सूर्य 20/12/2075	चंद्र 02/07/2093	00/00/0000
शुक्र 21/07/2059	सूर्य 21/07/2069	चंद्र 20/07/2076	मंगल 21/07/2094	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 13 वर्ष 2 मा 19 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - शनि	केतु - केतु	केतु - शुक्र	केतु - सूर्य	केतु - चंद्र
11/11/2023	21/07/2026	17/12/2026	16/02/2028	23/06/2028
21/07/2026	17/12/2026	16/02/2028	23/06/2028	22/01/2029
शनि 14/04/2024	केतु 30/07/2026	शुक्र 26/02/2027	सूर्य 23/02/2028	चंद्र 11/07/2028
बुध 01/09/2024	शुक्र 24/08/2026	सूर्य 19/03/2027	चंद्र 04/03/2028	मंगल 23/07/2028
केतु 28/10/2024	सूर्य 31/08/2026	चंद्र 24/04/2027	मंगल 12/03/2028	राहु 24/08/2028
शुक्र 10/04/2025	चंद्र 12/09/2026	मंगल 19/05/2027	राहु 31/03/2028	गुरु 22/09/2028
सूर्य 29/05/2025	मंगल 21/09/2026	राहु 22/07/2027	गुरु 17/04/2028	शनि 25/10/2028
चंद्र 19/08/2025	राहु 13/10/2026	गुरु 17/09/2027	शनि 07/05/2028	बुध 25/11/2028
मंगल 15/10/2025	गुरु 02/11/2026	शनि 23/11/2027	बुध 25/05/2028	केतु 07/12/2028
राहु 12/03/2026	शनि 26/11/2026	बुध 22/01/2028	केतु 02/06/2028	शुक्र 11/01/2029
गुरु 21/07/2026	बुध 17/12/2026	केतु 16/02/2028	शुक्र 23/06/2028	सूर्य 22/01/2029
केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध
22/01/2029	20/06/2029	09/07/2030	15/06/2031	24/07/2032
20/06/2029	09/07/2030	15/06/2031	24/07/2032	21/07/2033
मंगल 31/01/2029	राहु 17/08/2029	गुरु 23/08/2030	शनि 18/08/2031	बुध 13/09/2032
राहु 22/02/2029	गुरु 07/10/2029	शनि 16/10/2030	बुध 14/10/2031	केतु 04/10/2032
गुरु 14/03/2029	शनि 07/12/2029	बुध 04/12/2030	केतु 07/11/2031	शुक्र 03/12/2032
शनि 07/04/2029	बुध 30/01/2030	केतु 23/12/2030	शुक्र 13/01/2032	सूर्य 21/12/2032
बुध 28/04/2029	केतु 21/02/2030	शुक्र 18/02/2031	सूर्य 02/02/2032	चंद्र 21/01/2033
केतु 07/05/2029	शुक्र 26/04/2030	सूर्य 07/03/2031	चंद्र 07/03/2032	मंगल 11/02/2033
शुक्र 31/05/2029	सूर्य 15/05/2030	चंद्र 05/04/2031	मंगल 31/03/2032	राहु 06/04/2033
सूर्य 08/06/2029	चंद्र 16/06/2030	मंगल 25/04/2031	राहु 31/05/2032	गुरु 24/05/2033
चंद्र 20/06/2029	मंगल 09/07/2030	राहु 15/06/2031	गुरु 24/07/2032	शनि 21/07/2033
शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु
21/07/2033	19/11/2036	19/11/2037	21/07/2039	19/09/2040
19/11/2036	19/11/2037	21/07/2039	19/09/2040	20/09/2043
शुक्र 09/02/2034	सूर्य 07/12/2036	चंद्र 09/01/2038	मंगल 15/08/2039	राहु 03/03/2041
सूर्य 10/04/2034	चंद्र 07/01/2037	मंगल 14/02/2038	राहु 18/10/2039	गुरु 27/07/2041
चंद्र 21/07/2034	मंगल 28/01/2037	राहु 16/05/2038	गुरु 14/12/2039	शनि 16/01/2042
मंगल 30/09/2034	राहु 24/03/2037	गुरु 05/08/2038	शनि 19/02/2040	बुध 21/06/2042
राहु 01/04/2035	गुरु 12/05/2037	शनि 10/11/2038	बुध 20/04/2040	केतु 23/08/2042
गुरु 10/09/2035	शनि 09/07/2037	बुध 04/02/2039	केतु 14/05/2040	शुक्र 22/02/2043
शनि 21/03/2036	बुध 29/08/2037	केतु 11/03/2039	शुक्र 25/07/2040	सूर्य 18/04/2043
बुध 09/09/2036	केतु 20/09/2037	शुक्र 21/06/2039	सूर्य 15/08/2040	चंद्र 18/07/2043
केतु 19/11/2036	शुक्र 19/11/2037	सूर्य 21/07/2039	चंद्र 19/09/2040	मंगल 20/09/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

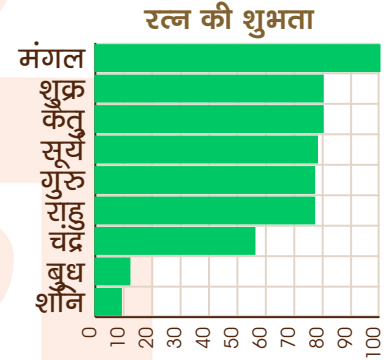
मूलांक	3
भाग्यांक	5
मित्र अंक	3, 5, 7, 9
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	मंगल, सोम, गुरु
शुभ ग्रह	मंगल, चन्द्र, गुरु
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	तुला, मीन, वृष
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	मोती
शुभ उपरत्न	चन्द्रमणि
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	रजत
शुभ रंग	श्वेत
शुभ दिशा	पश्चिमोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	शंख, कपूर, श्वेतचन्दन
दान अन्न	चावल
दान द्रव्य	दही

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
हीरा	शुक्र	80%	भाग्योदय, धनार्जन, सुख
लहसुनिया	केतु	80%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय
माणिक्य	सूर्य	78%	व्यावसायिक उन्नति, धन
पुखराज	गुरु	77%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय
गोमेद	राहु	77%	सुख, भाग्योदय
मोती	चंद्र	56%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	12%	व्यावसायिक हानि, व्यय, पराक्रम हानि
नीलम	शनि	9%	रोग, दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	21/07/1990	84%	62%	100%	0%	89%	67%	9%	77%	80%
शनि	21/07/2009	66%	38%	97%	25%	77%	86%	34%	83%	67%
बुध	21/07/2026	84%	38%	100%	38%	77%	86%	9%	77%	80%
केतु	21/07/2033	66%	38%	100%	12%	77%	86%	0%	64%	92%
शुक्र	21/07/2053	66%	38%	100%	25%	77%	92%	22%	83%	86%
सूर्य	21/07/2059	91%	62%	100%	12%	83%	67%	0%	64%	67%
चंद्र	21/07/2069	84%	69%	100%	25%	77%	80%	9%	64%	67%
मंगल	20/07/2076	84%	62%	100%	0%	83%	80%	9%	64%	86%
राहु	21/07/2094	66%	38%	97%	12%	77%	86%	22%	89%	67%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/1979-15/03/1980 27/07/1980-06/10/1982 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003 -----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012 -----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032 -----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052 -----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055 -----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057 -----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062 -----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	दम्पति
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	दुर्घटना से बचाव
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	भाग्योदय
		धनार्जन

फल

शुभ
शुभ
सम
शुभ
शुभ

क्षेत्र

पराक्रम
दम्पति
दुर्घटना से बचाव
भाग्योदय
धनार्जन

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराकमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराकम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराकम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- लग्नेश अष्टम भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य और चन्द्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मेष राशि में रवि हो तो जातक उदार, गम्भीर, शूरवीर, आत्मबली स्वाभिमानी, प्रतापी, चतुर, पित्तविकारी, युद्धप्रिय, साहसी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

आठवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकारत प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

मीन राशि में मंगल हो तो जातक गौरवरवर्ण, कामुक, आज्ञाकारी गन्दा, अस्थिर जीवन, रोगी, प्रवासी, मान्त्रीक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त और वाचाल होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मेष राशि में बुध हो तो जातक चतुर, प्रेमी, सत्यप्रिय, नट, रतिप्रिय कृशदेही, लेखक, ऋणी, मिलनसार, अविश्वस्त एवं बुरे विचार वाला होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्ब्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता,

दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

मीन राशि में शुक्र हो तो जातक जौहरी, शिल्पज्ञ, जमीन्दार, अच्छ और हास परिहास का स्वभाव, विद्वान, लोकप्रिय, शान्त, धनी, कार्यदक्ष, कृषिकर्म का मर्मज्ञ, शिष्ट और सभ्य सम्मानित एवं आराम तलब होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

कर्क राशि में शनि हो तो जातक, गरीब, कमसन्तान, बाल्यावस्था में दुखी, मातृरहित, प्राज्ञ, उन्नतिशील, विद्वान, हठी एवं स्वार्थी होता है।

राहु

चतुर्थभाव में राहु हो तो जातक असन्तोषी, दुखी, अल्पभाषी, मिथ्याचारी, उदरव्याधियुक्त, कपटी, मातृक्लेशयुक्त एवं कूर होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

केतु

दशम भाव में केतु हो तो जातक अभिमानी, परिश्रमशील मूर्ख, पितृद्वेषी, दुर्भागी, संन्यास लेना एवं योगी होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- बुध
(21/07/2009 - 21/07/2026)

बुध की महादशा 21/07/2009 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 21/07/2026 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध दशम भाव में स्थित है। बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चल रही थी। शनि के कारण सन्तान से सुख और शत्रु पर विजय मिली होगी तथा कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल रही होगी। बुध की इस दशा में आप को यश तथा ख्याति मिलेगी, जीवन में प्रगति होगी, सम्मान और उत्तम शिक्षा मिलेगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपमें भरपूर शक्ति, उत्साह तथा क्रियाशीलता रहेगी। मौसम में परिवर्तन के कारण हल्का ज्वर, विषाणु जन्य संक्रामक बीमारी, त्वचा रोग तथा स्नायविक दुर्बलता हो सकती है। अधिक मानसिक तथा शारीरिक श्रम से बचे।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त सुदृढ़ होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से आय में वृद्धि होगी। जमीन-जायदाद से भी आय में वृद्धि होगी। आपको माता-पिता से लाभ मिल सकता है। सट्टे में लेन-देन लाभदायक होगा। जीविकोपार्जन के लिए लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन सामग्री, कम्प्यूटर तथा हाथ से बने सामानों का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को सम्मान मिलेगा, आय में वृद्धि होगी तथा वरिष्ठ कर्मचारियों और उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। कार्य-स्थान में स्थिति अनुकूल होगी और अधीनस्थ कर्मचारियों तथा सहकर्मियों से सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार तथा व्यवसायियों के कार्य-क्षेत्र में वृद्धि होगी। आर्थिक तथा व्यावसायिक समृद्धि के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

गुरु की अन्तर्दशा में आपको जीवन का सुख मिलेगा। जमीन-जायदाद से संबंधित लेन-देन लाभदायक होगा। चल-अचल सम्पत्ति से लाभ मिलेगा। वाहन सुख भी मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा तथा सूर्य की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा होगी। कार्य के सिलसिले में यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आपकी शैक्षिक उपलब्धि आपकी जीविका की संभावना में वृद्धि करेगी। विज्ञान, लेखा, वाणिज्य, साहित्य तथा व्यापार के विषय में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि

है। आपका दिमाग विवेक पूर्ण व विश्लेषणात्मक है और आप सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छा रहेगा। आपके जीवन साथी की अचल सम्पत्ति में वृद्धि होगी, उनके अनेक मित्र होंगे और सुख की प्राप्ति होगी। आपका जीवन साथी के साथ सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता की विदेश यात्रा, साझेदारों से लाभ तथा आध्यात्मिक कार्यों में रुचि होगी। आपके पिता का धन-संग्रह और सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के कार्य में शुभ परिवर्तन और अचानक लाभ मिलेगा जबकि बड़ों का शुभ उद्देश्य के लिए व्यय होगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध अति उत्तम रहेगा। इस दशा के दौरान आपको यश, सम्मान तथा सफलता मिलेगी।

अन्तर्दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको व्यवसाय में सफलता, यश और ख्याति मिलेगी। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में धन और समृद्धि की प्राप्ति होगी जबकि सूर्य को अन्तर्दशा में व्यय तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण हर प्रकार का लाभ मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और कुछ बाधाएं हो सकती हैं। राहु की अन्तर्दशा में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान सुख और साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप बच्चों से सुख मिलेगा।

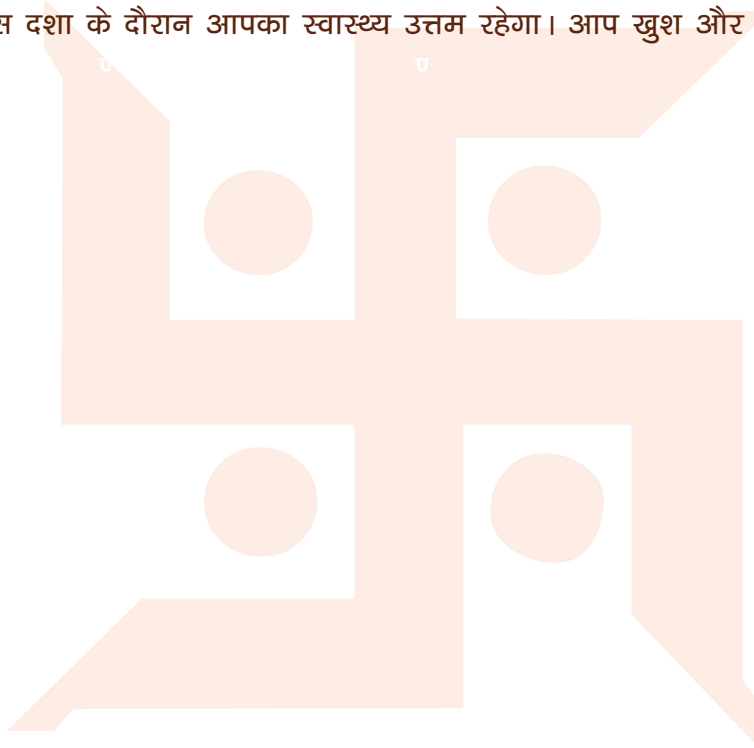
**महादशा :- केतु
(21/07/2026 - 21/07/2033)**

केतु की महादशा 21/07/2026 को आरम्भ और 21/07/2033 को समाप्त होगी।
इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दशम भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, विरोधियों पर विजय तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको यश ओर ख्याति मिलेगी और जीवन में प्रगति तथा लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे।



केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी तथा विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, हृदय-पीड़ा, निचले अंगों में पीड़ा बुखार फोड़ा तथा अल्सर आदि हो सकते हैं। समय पर उपाय करने से इनसे बचाव हो सकता है।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। व्यवसाय-व्यापार में उपार्जन अच्छा होगा। शत्रुओं-विरोधियों पर विजय मिलेगी। सद्भाव-कार्य कम करें। पिता से कुछ लाभ होगा। जीविका-व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, परिष्कृत कला, इंजीनियरिंग, सम्पर्क अधिकारी का कार्य, न्यायिक सेवा, प्रबन्धन तथा भाषा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। रत्न, विलासिता-सामग्री, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, कपड़े, रबड़ तथा प्लास्टिक आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्य स्थान में अनुकूल परिवर्तन आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह तथा सहकर्मियों-सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन में प्रगति, आय में वृद्धि तथा लाभ और व्यापार का विस्तार होगा। आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और साझेदारी में लाभ होगा। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और बड़ी दोनों यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। आपको परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भाषा, दवा, प्रबन्धन, इंजीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप कूटनीतिक और स्नेही हैं और आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। समाज सेवा में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की विरोधियों पर विजय और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत हो सकती है। आपके जीवनसाथी को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि और कुछ परिवर्तन होगा। आपकी माता को साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि पिता की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और उनके साथ अचानक कोई घटना घटेगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ और हानि और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी जबकि बड़ों के आवास या व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा और व्यय होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति और जीवन में प्रगति होगी। शुक्र की दशा में बच्चों से सुख, शिशु का जन्म, सफलता तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यवसाय में लाभ

होगा। मंगल के कारण जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और सगे-संबंधियों से सहायता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सफलता मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन-समृद्धि, यश तथा सफलता मिलेगी।



**अंतर्दशा :- केतु - केतु
(21/07/2026 - 17/12/2026)**

आपके लिए केतु महादशा 21/07/2026 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 21/07/2026 को प्रारंभ होकर 17/12/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसन्न होंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, माता से मधुर संबंध होंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख हो सकता है। आपके बहुत से मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता प्रसन्न रहेंगे, उत्तम भोजन और साधन उपलब्ध होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए अप्रत्याशित घटना, यात्रा और परिवर्तन का संकेत है।

आपकी संतान लक्ष्य प्राप्त करेगी, शत्रुओं पर विजय होगी, मित्र सहयोग करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहतों से उत्तम संबंध होंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द की दाल, तिल और कंबल दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - शुक्र
(17/12/2026 - 16/02/2028)**

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी।

इस अवधि में आप धनी और प्रसिद्ध होंगे। जीवन सुख-सुविधापूर्ण होगा। बड़ों और गुरुजनों का आशीर्वाद प्राप्त होगा। विवाह हो सकता है। दान-धर्म के कार्यों में भाग ले सकते हैं। कला में दक्षता की संभावना है। लाभदायक लघु यात्राएं हो सकती हैं। विज्ञापन क्षेत्र में सक्रियता के लिए समय उपयुक्त है। सफलता स्वयं के प्रयास से ही मिल जाएगी।

आपके जीवनसाथी सफलता प्राप्त करेंगे। आपके पिता भी सफल होंगे। माता को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, प्रसन्नचित्त रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, आराम, संभवतः विवाह, सफलता और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान के लिए समय शुभ रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा, धनी बनेंगे, विवाहित जीवन सुखी रहेगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो पुरानी साख से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों की आय अच्छी होगी, लघु यात्राएं होंगी, स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली गठिया आदि व्याधि हो सकती है।

**अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(16/02/2028 - 23/06/2028)**

आपके लिए केतु महादशा 21/07/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 16/02/2028 को प्रारंभ होकर 23/06/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। तीर्थयात्रा कर सकते हैं; अध्यात्म में रुचि होगी। नेकी के कार्य करेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा, शिक्षा उत्तम होगी, बहुत से मित्र होंगे। विरासत में जायदाद मिल सकती है। घरेलू सुख रहेगा; माता से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी बनेंगे, इच्छाएं पूर्ण होंगी। माता को साझेदार के माध्यम से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ, खर्चे, यात्रा और शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान के सम्मान में वृद्धि होगी, उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, उच्चपद प्राप्त करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाता सफल रहेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गायत्री मंत्र का जाप करें।

**अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(23/06/2028 - 22/01/2029)**

आपके लिए केतु महादशा 21/07/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 23/06/2028 से प्रारंभ होकर 22/01/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। जीवनसाथी के धन से धनार्जन हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आप धनी बनेंगे, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। मधुर वाणी के कारण लोकप्रिय बनेंगे। परिवार सुखी होगा। राजनीति या समाज

सेवा में भाग ले सकते हैं। आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे उन्हें सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। माता को संतान से सुख मिलेगा; निवेश से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए कार्यों में बाधा, स्पर्धा में वृद्धि, बहुत मित्र, धन और संतान से प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, नींव सुदृढ़ बनेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय करना उनके लिए लाभकारी हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं को विरोध का सामना करना पड़ सकता है। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्याम रखना श्रेयस्कर रहेगा। श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

**अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(22/01/2029 - 20/06/2029)**

आपके लिए केतु की महादशा 21/07/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 22/01/2029 को प्रारंभ होकर 20/06/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप उच्चकोटि का बौद्धिक कार्य कर सकते हैं, दूसरों पर आपका बहुत प्रभाव होगा विविध गतिविधियों में सक्रिय रहेंगे। भाग्य साथ देगा, धनी बनेंगे। यात्राएं हो सकती हैं, अचल संपत्ति के मालिक बन सकते हैं। कला में रुचि होगी, साहसी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगी, साहस में वृद्धि होगी, उत्साही रहेंगे, कार्य पूर्ण होंगे। आपके पिता विश्वासी और उत्साही होंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, बाधाएं पार करेंगी, मुकदमे में जीत होगी।

आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, विवाह, यात्रा, व्यापार में लाभ का संकेत है। आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, सफलता मिलेगी, तकनीकी विषयों में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के मंत्र का जाप करें।

ॐ अं अंगारकाय नमः

**अंतर्दशा :- केतु - राहु
(20/06/2029 - 09/07/2030)**

आपके लिए केतु महादशा 21/07/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 20/06/2029 को प्रारंभ होकर 09/07/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। चिंताओं से मुक्ति मिलेगी। समाज, व्यापार या कार्यक्षेत्र में लाभ होगा। समाज की भलाई का कार्य कर सकते हैं। प्रसिद्धि प्राप्त होगी। लंबी यात्रा या तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। विदेशियों से संबंध हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे और प्रसिद्ध बनेंगे।

आपके पिता को अचानक लाभ हो सकता है। माता सफल होंगी, सुख-साधन उपलब्ध होंगे, अन्य लोगों से सहायता प्राप्त होगी। आपके भाई-बहनों के लिए धन, उत्तम शिक्षा, उत्तम पारिवारिक जीवन, शत्रुओं पर विजय, कर्ज से मुक्ति और सफलता का संकेत है।

आपकी संतान को सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों की सक्रियता बढ़ेगी, आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- केतु - गुरु
(09/07/2030 - 15/06/2031)**

आपके लिए केतु महादशा 21/07/2026 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 09/07/2030 को प्रारंभ होकर 15/06/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। भाई-बहनों और चाचा से उत्तम संबंध होंगे। प्रभावशाली मित्र होंगे। संतान से सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा, व्यापार में लाभ होगा। संचार माध्यम और लघु यात्राओं से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। माता के जीवन में परिवर्तन आ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य और धन का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली होगी, उन्हें साझेदारी से लाभ होगा। अगर आप

सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए केसर, हल्दी, चने का दान करें।

